आखिर क्यों लगती है जंगल में आग?

डॉ. महेश परिमल

वैसे जंगल की आग कोई नई चीज़ नहीं है। कहते हैं इसका इतिहास लगभग 4,000 लाख साल पुराना है। पहली वनाग्नि, जिसके प्रमाण उपलब्ध हैं, लगभग 3,900 लाख साल पहले कार्बोनिफेरस युग में आई थीं। भारत में पुरातत्व अध्ययन के आधार पर पता चलता है कि करीब 2,000 लाख साल पहले मध्य भारत में दावानल की पहली घटना घटी थी।

आग के कारणों में यह मानकर चला जाता है कि दो-तिहाई आग की घटनाएं मानव जनित होती हैं और एक-तिहाई प्राकृतिक कारणों से। असल में ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत में पेड़-पौधे अपने पुराने पत्तों से मुक्त होकर नई कोपलों को जन्म देते हैं। इन झड़ते पत्तों से वन में आग लगने का भय बना रहता है। मार्च-अप्रैल में पतझड़ व बढ़ते खरपतवार, खास तौर से लेंटाना आदि के कारण आग का खतरा बढ़ जाता है। एक सर्वेक्षण के अनुसार, मध्य हिमालय में प्रति हैक्टर 2.1 से लेकर 3.8 टन पत्ते झड़ते हैं। इनमें से 82 प्रतिशत सूखी पत्तियां ही होती हैं। इसी तरह से अकेले लेंटाना जैसी झाड़ियां, जो 40 लाख हैक्टर वन-भूमि पर फैल चुकी हैं, आग को भड़काने में पूरा योगदान करती हैं।

पिछले पचास वर्षों में वनों में आग की घटनाएं खूब बढ़ी हैं; खासकर जब से वनों का स्थानीय निवासियों से रिश्ता समाप्त हुआ है। पहले गांवों में परंपरा थी कि वनों में आग लगते ही पूरा गांव एकजुट होकर आग बुझाने जाता था। आज ये भावनाएं खत्म हो गई हैं। ऐसा नहीं है कि जंगल की आग रोकने के लिए सरकार की तरफ से कोशिश नहीं होती। देहरादून के वन अनुसंधान संस्थान ने इसरो के साथ मिलकर वनों में आग लगने की सूचना प्राप्त कर तत्काल स्थानीय व राज्य प्रशासन को सूचित करने की व्यवस्था की है। साल 2004 से प्रभावी यह योजना किसी भी राज्य के वन में लगी आग की सूचना दे सकती है। दावानल की गंभीरता को देखते हुए इसे राष्ट्रीय आपदा प्राधिकरण ने आपदा का दर्जा तो दे दिया है, पर इसका कहीं ज़्यादा प्रभाव दिखाई नहीं देता।

कोई दहनशील पदार्थ ऑक्सीजन की उपस्थिति में जब पर्याप्त ऊष्मा के संपर्क में आता है, तो आग पैदा होती है। इनमें से किसी एक की अनुपस्थिति में आग पैदा नहीं हो सकती है। आग एक बार जल जाती है तो जब तक ऑक्सीजन और दहनशील पदार्थ की उपस्थिति रहती है, तब तक वह जलती और फैलती रहती है। आग को ऑक्सीजन और ईंधन में से किसी एक को अलग कर बुझाया जा सकता है, आग पर पानी की पर्याप्त बौछार पड़ती है तो ऑक्सीजन की उपस्थिति में बाधित होती है और आग बुझ जाती है। कार्बन डाइऑक्साइड की मदद से भी आग बुझाई जा सकती है। जंगल की आग बुझाने के लिए मुख्य ज्वाला से दूर छोटी-छोटी ज्वाला पैदा कर ईंधन की आपूर्ति बंद की जाती है।

हर साल तपिश बढ़ते ही जंगलों में आग लगने की घटनाओं में बढ़ोतरी हो जाती है। समूची प्राकृतिक संपदा जंगल में आग लगने से बरबाद हो जाती है। करोड़ों का नुकसान हो जाता है। आम तौर पर एक जंगल में आग लगने की 100 से 200 छोटी-बड़ी घटनाएं होती हैं। इसमें करीब 2 से 3 करोड़ का नुकसान होता है। इस आग में जंगल की संपदा ही नहीं, बल्कि पेड़-पौधे, फूल-पत्तियां, बीज, पक्षियों के घोंसले, अंडों आदि का नाश हो जाता है। इसके अलावा मवेशियों का चारा जल जाता है, उनके लिए चारे की समस्या उत्पन्न हो जाती है। आइए देखें कि आखिर यह आग लगती कैसे है, क्यों लगती है, इसे रोकने के उपाय क्या हैं?

कारण

चीड़ की पत्तियों का जमा होना - गर्मी के महीनों में

चीड़ सहित सभी वृक्षों की पत्तियां झड़ती हैं। वनों में इकट्ठा इन पत्तियों के ढेर आग के मुख्य स्रोत होते हैं। पूरे वन में फैली हुई चीड़ की सूखी पत्तियों की चादर एक से दूसरे छोर तक आग के बेरोकटोक फैलने का काम आसान कर देती है।

तापमान में वृद्धि - हाल के वर्षों में ग्रीन हाउस प्रभाव के कारण दुनिया भर की जलवायु में अनेक अनचाहे परिवर्तन हुए हैं। इनमें से प्रमुख हैं गर्मी के महीनों में वृद्धि, जाड़ों में वर्षा कम होने के कारण लंबे समय तक चलने वाला शुष्क मौसम और पृथ्वी के तापमान में बढ़ोतरी। भारत भी विश्व भर की जलवायु में होने वाले इन परिवर्तनों से अछूता नहीं है। इन परिवर्तनों के कारण वनों में बार-बार आग लगने का खतरा बढ़ गया है।

मानवीय/आकस्मिक कारण - वनों की आग के सबसे प्रमुख कारण मानव जनित हैं।

धूम्रपान - धूम्रपान वनों में आग लगने के लिए ज़िम्मेदार मानवीय कारणों में से एक है। कुछ लोग आदतन धूम्रपान का लुत्फ लेते समय जलती हुई सिगरेट, बीड़ी के टुकड़े अथवा माचिस की तीली जंगल में फेंक देते हैं जो वनों में पड़े हुए सूखे कचरे के संपर्क में आकर भीषण आग का कारण बन जाते हैं।

घुमक्कड़ जातियों द्वारा अलाव जलाना - हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय भागों में बीच-बीच में घास के बड़े मैदान और चारागाह हैं जिनमें गद्दी और गुज्जर जैसी अनेक घुमक्कड़ जातियां रहती हैं। जंगल में तंबुओं में रहते समय अलाव की आग का मज़ा लेना इनकी आदत में रच बस गया है। कभी-कभी एक स्थान से दूसरे स्थान जाते समय ये अलाव को जलता हुआ छोड़ जाते हैं जिससे जंगलों में आग भड़क उठती है।

शहद निकालना - हिमाचल प्रदेश के वनों में अनेक प्रजाति की मधुमक्खियां पायी जाती हैं। वनों में वृक्षों की शाखाओं से लटकते हुए मधुमक्खियों के छत्ते कहीं भी देखे जा सकते हैं। बहुत बार शहद निकालने के लिए धुआं करके डंक मारने वाली मधुमक्खियों को भगाना पड़ता है। धुआं करने के लिए जलाई गई आग लापरवाही से इधर-उधर फेंकने पर वन में आग लग सकती है।

घास के मैदानों को जलाना - घास के अधिकांश मैदान वनों से सटे हुए हैं। लेंटाना की झाड़ियों के फैलते जाने से घास के मैदानों का क्षेत्रफल सिकुड़ता जा रहा है। इन झाड़ियों से छुटकारा पाने के लिए अक्सर गर्मियों में इनमें आग लगा दी जाती है। घास के मैदानों की यह आग कभी-कभी जंगलों तक फैल जाती है।

जानबूझकर जंगलों में आग लगाना - जंगली जानवरों द्वारा वनों से सटे खेतों की खड़ी फसल को तहस-नहस करने की घटनाएं खतरनाक सीमा तक बढ़ गई हैं। इससे कम जोत वाले छोटे किसानों को सबसे अधिक नुकसान होता है। बुआई के मौसम में पसीना बहाकर फसल उगाने के पश्चात जब किसानों के लिए खेतों से भरपूर फसल प्राप्त करने का समय आता है तो कभी-कभी जंगली जानवरों के झुण्ड एक ही रात में इनकी फसलों को नष्ट करके सारे परिश्रम पर पानी फेर देते हैं। परिणामस्वरूप गुस्से से भरे हुए किसान जंगली जानवरों को मारने के लिए वनों को ही आग लगा देते हैं।

जंगल से जुड़े अधिकारी बताते हैं कि वनों में प्राकृतिक रूप से आग लगने की घटना न के बराबर होती है। होता यह है कि जंगल के आसपास रहने वाले आदिवासी वनौषधि एवं वहां पैदा होने वाले अनाज आदि पर निर्भर होते हैं। इससे उनकी जीविका चलती है। होली के पहले महुए का सीज़न होता है। आम तौर पर आदिवासी महुए का इस्तेमाल शराब बनाने के लिए करते हैं। वन विभाग ने इस पर प्रतिबंध लगा रखा है, इसलिए आदिवासी रात में महुए के पेड़ के नीचे जाकर साफ-सफाई करते हैं। वहां सूखे पत्तों को इकट्ठा कर जला देते हैं, यह आग दावानल का रूप ले लेती है। चूंकि आदिवासी जंगल पर निर्भर होते हैं, इसलिए उन पर कार्रवाई संभव नहीं हो पाती। यदि वन विभाग आदिवासियों को समझाकर उनसे सहयोग की अपेक्षा रखे, तो कोई नया रास्ता निकल सकता है।

आग की घटनाओं को रोकने के लिए वन विभाग पहले तो अग्निरेखा खींचता है। इसकी चौड़ाई 10 से 20 मीटर होती है। इस पट्टी में कोई पेड़ नहीं होता, खुला मैदान

होता है। इसके अलावा आग देखने के लिए कई स्थानों पर ऊंचे-ऊंचे टावर भी बनाए जाते हैं, ताकि आग को देखते ही उसे बुझाने की कार्रवाई की जा सके। इसके लिए वन विभाग काफी खर्च भी करता है। कर्मचारियों को उच्च स्तर का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। अतीत में हुई आग की घटनाओं का विस्तृत अध्ययन किया जाता है। नक्शा आदि बनाकर यह पता लगाया जाता है कि आग का उद्गम स्थल कहां है, आग किन स्थानों पर अधिक लगती है, इनमें से संवेदनशील और असंवेदनशील स्थान कौन-से हैं? इसके लिए वन विभाग आदिवासियों के साथ मिलकर समितियां भी बनाता है ताकि आग की घटनाओं पर काबू पाया जा सके। इन समितियों के सदस्यों को यह प्रशिक्षण दिया जाता है कि किस तरह से आग पर काबू पाया जाए, आग की सूचना किस तरह से अन्य ग्रामीणों को दी जाए।

वन में छोटे-छोटे रोपे और सूखे पेड़ होते हैं। इन्हीं के आसपास पक्षियों के घोंसले भी होते हैं जो आग में जल जाते हैं। इनके साथ ही उनके अंडे भी जल जाते हैं। इसके लिए वन विभाग के कर्मचारी अक्सर ऐसे स्थानों की पेट्रोलिंग करते हैं।

वन विभाग आदिवासियों एवं ग्रामीणों पर यह आरोप अवश्य लगाता है कि आग उनके द्वारा लगाई जाती है, पर यह पूरा सच नहीं है। आदिवासी-ग्रामीण यह अच्छी तरह से जानते हैं कि यदि उन्होंने आग लगाई, तो नुकसान उन्हीं का है। आग से चारा चल जाएगा, तो उनके पशु भूखे मर जाएंगे। इसलिए वे सचेत रहते हैं, अपने लिए न सही पर पशुओं के लिए उन्हें सचेत रहना ही पड़ता है। उल्लेखनीय है कि जंगल में जब कभी आग लगती है, तो उसे पानी से नहीं बुझाया जाता। आग को रोकने के लिए अग्नि पट्टियां बनाई जाती हैं। आग का विस्तार अधिक न हो, इसके लिए उन सूखे पत्तों-लकड़ियों को वहां से हटा दिया जाता है, जिससे आग बढ़ने से रोका जाए। इसके लिए वन विभाग द्वारा आदिवासियों को प्रशिक्षण दिया जाता है। आग बुझाने में मदद करने वाले आदिवासियों को हर्जाना, मज़दूरी आदि भी दिए जाते हैं ताकि भविष्य में वे आग रोकने में पूरी शिद्दत से वन अधिकारियों की मदद करें।

आग लगने के पीछे वन माफिया का भी हाथ होता है। कई बार कर्मचारियों का ध्यान भटकाने के लिए ये लोग जंगल में आग लगा देते हैं, ताकि कर्मचारी उधर व्यस्त हो जाएं और वे अवैध रूप से लकड़ियां जंगल से बाहर ले जाएं। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत अगस्त 2012
अंक 283

- **खून चूसने वाली जोक से शोध में नया कदम**
- **डूबकर तेज़ी से बढ़ती धान**

- **क्या परमाणु भार स्थिर नहीं रहते?**

- **वन गावों में सौर ऊर्जा से मोबाइल चार्जिंग**
- **वाहनो की संख्या के साथ बढ़ती बीमारियां**